पूज्य श्री लालचंदभाई का प्रवचन
श्री समयसार गाथा ३५६-३६५
भिंड, ता. ८-४-१९८९, प्रवचन नंबर P १४

ये शिविर अंदर समझने के लिए, दो पार्ट हो गया है। पहला पार्ट और दूसरा पार्ट। पहले पार्ट में यानि पहले विभाग में, प्रथम विभाग में क्या आया? कि ये आत्मा ज्ञान-स्वभावी आत्मा है। अभी चला ना? आत्मा क्या है? ज्ञान स्वभावी आत्मा होने से, ज्ञायक होने से, ज्ञाता होने से, केवल ज्ञाता ही है और कर्ता नहीं है। वो पहला विभाग बहुत दिन चला।

बाद में कल से, एक दूसरा विभाग चला कि आत्मा पर का ज्ञाता नहीं। जेसे पर की कर्ताबुद्धि अज्ञान है ऐसे मैं पर को जानता हूँ ऐसी ज्ञाताबुध्दि है, ज्ञाता नहीं, ज्ञाता की बुद्धि। आहाहा! अनुभव के बाद ज्ञाता होता है। अनुभव के पहले ज्ञाताबुद्धि हो जाती है। ऐसे अनुभव के पहले कर्ताबुद्धि हो जाती है, वो अज्ञान है। अनुभव के बाद उपचार से कर्ता होता है, वो व्यवहार है। कर्ताबुद्धि अलग और कर्ता अलग है। ऐसे अनादिकाल से जीव को पर का मैं ज्ञाता हूँ, ऐसी बुद्धि हो गई है, वो बुद्धि मिथ्या बुद्धि है।

अपना समर्थ आचार्य भगवत कुन्दकुन्द आचार्य भगवान, जिसका तीसरा नाम है, उसने बंध तत्व के अधिकार में ऐसा लिखा कि मैं पर को मारनेवाला हूँ, सुखी दुःखी करनेवाला हूँ, वो तो भाव-बंध मिथ्यात्व अध्यवसान है ही। कर्ताबुद्धि तो मिथ्यात्व है ही। कर्ताबुद्धि और कर्ता में भी difference है। कर्ताबुद्धि अज्ञान है, कर्ता व्यवहार है। ज्ञान का कर्ता आत्मा, व्यवहार है। तो कर्ताबुद्धि वो भावबंध है। मैं पर को सुखी दुःखी कर सकता हूँ। एक द्रव्य दूसरे द्रव्य का करने वाला तीन काल में है ही नहीं तो भी अनंतकाल से अभिमान हो गया है कि मैं कर्ता हूँ। वो तो अध्यवसान है ही। मगर आचार्य भगवान ने एक अपूर्व बात किया कि जो जितनी अभी जिनवाणी है, विद्यमान है, अभी थोड़ी बची है, उसमें भी, आत्मा पर को जानता है वो मिथ्यात्व है, अध्यवसान है, वो नहीं आता है। मगर एक समयसार में आया कि सर्वज्ञ भगवान का कहा हुआ छह द्रव्य, उसको मैं जानता हूँ, (उसका) जाननहार हूँ, उसका नाम भावहिंसा है, भावमरण है, अध्यवसान है, मिथ्यात्व है। आहाहा!

ये कुन्दकुन्द भगवान की वाणी के साथ, सीमंधर भगवान की वाणी का साक्षात अनुसंधान है। ये अपूर्व चीज है। ये साधारण चीज नहीं है। कोई मानो कि कोई न मानो। आहाहा! अनुसंधान हो गया। आत्मज्ञानी तो था, आनंद का अनुभवी तो था, मगर कोई ऐसा बनाव बन गया कि साक्षात सदेह कुंदकुंद भगवान, सीमंधर भगवान के समवशरण में गये। आहाहा! और आठ दिन रहे और वहाँ वाणी सुनकर इधर आये, समयसार शास्त्र की रचना की। आस्रव आदि का तो लिखा मगर उसका चार भेद किया मिथ्यात्व, अविरत, कषाय योग। और आस्रव के अलावा बन्ध अधिकार लिखा। बंध में तो अकेला मिथ्यात्व का परिणाम वो ही बंध तत्व है। आहाहा! जहाँ बंध तत्व है वहाँ तक तो आस्रव है। मगर बंध चले जाने के बाद थोड़ा आस्रव रहता है, वो बंध का कारण नहीं है। अकेला भावबंध मिथ्यात्व अध्यवसान ही बंध का कारण है, मुख्य तौर से। गौणरूप से राग अल्प बंध है, वो गौण है। अनंत संसार का कारण नहीं है।

Version 1: http://AtmaDharma.com or http://AtmaDharma.org Please report errors to rajesh@AtmaDharma.com

सचमुच तो वो राग निर्जरा का कारण है। ज्ञानी का राग (निर्जरा का कारण है)। आहाहा! तो ऐसी ये बात बंध अधिकार में अपूर्व आया कि, धर्मास्तिकाय को मैं जानता हूँ, अध्यवसान मिथ्यात्व का दोष आ गया। इधर कोई खून करता है, तो उसको तो जेल मिलती है, उसको तो जेल मिलती है। मगर मैं पर को जानता हूँ इसके लिए कोई इधर जेल नहीं है। कुदरत के घर में जेल है। आहाहा! भावबंध वो जेल है। वो जो चालू रखेगा, तो भैया! उसका फल क्या होगा?

ऐसे पर को जानना एक दफे बंद कर दे, और आत्मा को जान ले। काम हो जाएगा। बाद में पर को जानना वो ज्ञाताबुद्धि नहीं है, ज्ञाता है। ज्ञाताबुद्धि अज्ञान है, ज्ञाताबुद्धि अज्ञान है। ज्ञाता (व्यवहार है)। छह द्रव्य को जानना, आत्मा को जानने के बाद, वो व्यवहार है। आत्मा को जानना छोड़ देना और छह द्रव्य, नौ तत्व को जानना, आठ कर्म को जानना, १४८ कर्म प्रकृति को जानना, 14 गुणस्थान को जानना, वो ज्ञाताबुद्धि, अज्ञान है। ज्ञाताबुद्धि अलग है और ज्ञाता होना अलग है। ज्ञाताबुद्धि छूट जाती है आत्मा का अनुभव होता है, बाद में ये ज्ञाता होता है। सारे विश्व का ज्ञाता कहो, वो भी एक व्यवहार है। सचमुच तो ज्ञान को ही जानता है।

तो ये कल से वो बात चली थी, इन्द्रिय ज्ञान का जीतने का प्रकार उसके सन्दर्भ में वो सेटिका की गाथा लेना है। अभी योगानुयोग आत्मधर्म निकला, ये मार्च का, सोनगढ़ से। अपने गुरुदेव की वाणी उसमें है। गुरुदेव ने कहा, यहाँ दूसरे जीवों की हिंसा या चोरी, वो तो भावबंध है ही, वो तो हिंसा है। पर की हिंसा का भाव, वो तो हिंसा है ही। मगर जाननहार का ज्ञान है ये न मान कर, ये ज्ञान जीव का है आत्मा का है ज्ञायक का है, ऐसा न मानकर, रागादि पर का ज्ञान है, ऐसा मानना इसका नाम हिंसा है। क्या कहा? राग की कर्तत्व बुद्धि तो हिंसा है ही मगर अपने को जानना भूल गया और राग को जानने में रुक गया, वो भावहिंसा है, भावबंध है। वहाँ धर्मादिक को जाने तो भावहिंसा है। गुरुदेव ने कहा रागादिक को जाने, तो भावहिंसा भावबन्ध होता है।

मुमुक्षुः- स्वर्ग से पधारे साहब गुरुदेव श्री, स्वर्ग से पधारे गुरुदेव श्री।

उत्तरः- ये गुरुदेव की वाणी है, तो गुरुदेव स्वर्ग से पधारे, ऐसा भाईसाहब ने कहा। ये सब गुरुदेव का ही प्रभाव है। भैया! ये साधारण दोष नहीं है। कि मैं पर को जानता हूँ उसको गुण मानता है जीव। स्वभाव है जानता है इसलिए गुण है। गुण नहीं है बड़ा दोष है। आहाहा! साधारण दोष (नहीं है)। जीसको गुण माने इसमें त्याग-बुद्धि आती नहीं है। सर्वज्ञ भगवान लोकालोक को जाने, में मेरे क्षयोपशम अनुसार थोड़ा पदार्थ को जानूं, आहाहा! बड़ा भारी दोष है भाई। ज्ञान जिसका है उसको जानना नहीं और ज्ञान जिसका नहीं है, उसको जानना, उसका नाम ही पाप है। आहाहा! ये धन्नालालजी साहब का लड़का चोंक उठा कि आत्मा पर को जानता है तो पाप है! तो उसने कहा कि ये बात कभी हमने जिंदगी भर सुनी नहीं थी। आहाहा! ये क्या बात है? ये अनुसंधान है सीमंधर भगवान के साथ वाणी का वो ही कह सकते हैं कि धर्मास्तिकाय को जानना पाप है। आहाहा! समर्थ आचार्य है आहाहा! भावलिंगी संत ऐसा जिसका नाम है। कोई चैलेंज इसमें कर सकते नहीं है।

अभी एक बात तो हो गई कि आत्मा ज्ञाता है और कर्ता नहीं है। ये मंत्र है ज्ञाता हूँ और कर्ता नहीं। आहाहा! बाद में ज्ञाता ही हूँ, नास्ति का भाव छोड़ देना। निषेध का विकल्प छोड़ देना, विधि का

Version 1: http://AtmaDharma.com or http://AtmaDharma.org Please report errors to rajesh@AtmaDharma.com

विकल्प आता है कि ज्ञाता ही हूँ, वो विकल्प छूटता है और अनुभव होता है। ऐसी प्रक्रिया ये गाथा में आएगी, इसका स्वाध्याय करना है। अभी थोड़ा टाइम रह गया है, जितना चले उतना ठीक है।

टीका:- **इस जगत में**, सर्वविशुद्ध ज्ञान अधिकार है, उसकी ३५६ गाथा है। **इस जगत में कलई है**, कलई कहते हैं ना चूना। कलई कलई लिखा है। हमारे वहाँ चूना बोलते हैं और इस में है सेटिका। सेटिका कहो कलई कहो, चूना कहो एक ही बात है। खड़िया खड़िया, सेटिका याने खड़िया। आहाहा! खड़ी सफ़ेद होती है ना। **इस जगत में कलई है वह**, वह उसका पहला स्वभाव क्या है? कलई का? कलई अपने स्वभाव को छोड़ती नहीं है। ख्याल रखना, एक-एक शब्द में माल है। कलई अपना स्वभाव, डब्बे में हो या भींत में हो, अपना स्वभाव छोड़ता नहीं है। कलई, **श्वेत गुण से परिपूर्ण स्वभाववाला द्रव्य है**। उस द्रव्य में अकेला श्वेत गुण से भरा है, उसमें कोई मिलावट नहीं है, आहाहा! एक बात।

दूसरी बात, **दीवार-आदि पर द्रव्य**, जो दीवार है ना पर द्रव्य, **व्यवहार से उस कलई का श्वैत्य है**, अर्थात कलई के द्वारा श्वेत किये जाने योग्य पदार्थ है। आहाहा! ये व्यवहार नय का कथन है। कलई अपने स्वभाव को छोड़कर काली भींत को ब्लैक भींत को सफेद कर सकती नहीं है। आहाहा! **अब 'श्वेत करने वाली** जब कलई ऐसा कहा जाता हैं ना। भींत को सफेद किया, कलई ने, कल तक तो भींत काली थी, गंदी। आज कलई लगाया तो कलई ने भींत को सफेद किया। कल तक तो वो कलई डब्बे में थी, तब कलई सफेद थी। वो डब्बे में से निकलकर वहाँ चिपकी, तो भींत सफेद हुई। तो कलई का ही नाश हो गया। समझ में आया?

आदरणीय बाबूजी:- तो कलई भींत हो गई।

उत्तर:- तो कलई भींत हो गई। आहाहा! हो सकती है? नहीं। ऐसे ज्ञान पर को जानता है, तो पररूप हो सकता है? (नहीं) **श्वेत करनेवाली कलई**, **श्वेत किये जाने योग्य जो दीवार आदि परद्रव्य की है या नहीं**? अपने विचार करने बैठो। कि जो कलई भींत में लगी, तो कलई कलई रूप हो गई कि भींत रूप हो गई? इसका दो का तात्विक सम्बन्ध क्या है? अपने विचार करो। विचार करने में क्या बात? कोई वांधा नहीं। **इस प्रकार दोनों के तात्विक** यानि कि **पारमार्थिक**, सत्यार्थ **संबंध का यहाँ विचार किया जाता है**। संबंध का। दो के बीच में क्या संबंध है, ऐसा तात्विक विचार करना चाहिए। आहाहा! कलई डब्बे में होकर भी कलई है। और भींत में लगे तो भी कलई है। है तो कलई, मगर जिसकी दृष्टि भींत पर है, उसको भींत सफेद लगती है। तो कलई गायब हो गई। होने पर भी दिखाई नहीं देती। आहाहा! **यदि कलई दीवार-आदि परद्रव्य की हो**। परद्रव्य से चिपकी, तो परद्रव्य की हो, **तो क्या हो**? **वह प्रथम विचार करते हैं**। जो कलई भींत में लगाया, तो उसके साथ संबंध क्या है - विचार करो। और जो परद्रव्य भींत की जो हो गई कलई, भींत सफेद हो गया, समझो ना। तो भींत सफेद हुआ कि कलई सफेद है। आहाहा!

आदरणीय बाबूजी:- कमरा सफेद हो गया।

उत्तर:- कमरा सफेद हो गया और तेरी बुद्धि बिगड़ गई। तेरी बुद्धि बिगड़ गई। बुद्धि काली हो गई। अज्ञान हो गया। **परद्रव्य की हो तो क्या**? **यह प्रथम विचार करते हैं**। जिसका जो होता है, वह वही होता है। महासिद्धांत। आहाहा! उपदेश बोध अलग है और सिद्धांत बोध अलग है। सिद्धांत बोध तीन काल

Version 1: http://AtmaDharma.com or http://AtmaDharma.org Please report errors to rajesh@AtmaDharma.com

में फिरने वाला नहीं। जिसके हृदय में सिद्धांत बोध आ गया आहाहा! तुरंत ही अनुभव होता है और तुरंत से मोक्ष हो जाता है।

सिद्धांत - जिसका जो होता है वह वही होता है। ऐसा सिद्धांत। अभी वो सिद्धांत समझने के लिए आत्मा का दृष्टान्त, दृष्टान्त किसका? (आत्मा का) सिद्धांत में तो सब आ गया। सिद्धांत तो छह द्रव्य पे लागू हो गया। मगर **जैसे आत्मा का ज्ञान होने से**, आत्मा का ज्ञान होने से, **ज्ञान वह आत्मा ही है**। आत्मा का ज्ञान होने से ज्ञान आत्मा ही है। आत्मा का नहीं, आत्मा ही है। जैसे निम्बू की खटास होने से, खटास वह निम्बू ही है। कि दाल हो गई? (नहीं) दाल में पड़ गई तब भी निम्बू ही है। निम्बू की खटास थी? कि दाल खट्टी हो गई? (निम्बू की खटास है) ऐसे शक्कर की मिठास है, तो मिठास शक्कर ही है। ऐसे आत्मा का ज्ञान होने से, ज्ञान आत्मा ही है। **एव**।

कथंचित् आत्मा का और कथंचित् ज्ञेय का राग का। जहाँ-तहाँ कथंचित लगाता है। जहाँ तहाँ कथंचित् लगाता है। स्वभाव में कथंचित् होता ही नहीं है। आहाहा! स्वभाव ज्ञाता ही है, सर्वथा ज्ञाता ही है। कथंचित् ज्ञाता और कथंचित् कर्ता लगाता है। आहाहा! अनेकान्त करो, कथंचित् ज्ञाता और कथंचित् राग का कर्ता, तो अनेकांत। आहाहा! तेरी दृष्टि मिथ्यात्व है। अनेकान्त का स्वरूप तो जानते नहीं है। ज्ञाता है और कर्ता नहीं है, ये अस्ति-नास्ति का नाम अनेकान्त है। क्या कहा? आत्मा ज्ञाता है और कर्ता नहीं है, इसका नाम अनेकान्त है। स्वरूप से सत्ता, स्वरूप से सत्ता, पररूप से असत्ता - दो भाव के द्वारा ही पदार्थ की सिद्धि होती है।

जैसे आत्मा का ज्ञान होने से, ज्ञान वह आत्मा ही है - ऐसा तात्विक संबंध, तात्विक यानि परमार्थ सम्बन्ध, ज्ञान और आत्मा के साथ है। **(अर्थात विद्यमान) होने से कलई यदि दीवार-आदि की हो तो**, कलई दीवार आदि की हो तो क्या दोष आता है कि नहीं - विचार करो। कलई यदि, यदि, जो कि, ऐसा होता तो भी विचार करो, विचार करके निर्णय करो। हम कहते हैं इसलिए नहीं। अनुभव से प्रमाण करो। **कलई यदि दीवार-आदि की हो तो, कलई वह दीवार आदि ही होगी**। दीवार की कलई है तो, कलई दीवार होगी। कलई अलग रही नहीं **अर्थात कलई दीवार-आदि स्वरूप ही होना चाहिए**। आहाहा! जो दीवार की कलई है, तो कलई दीवार हो गई। कलई तो दीवार की होती नहीं है। दीवार दीवार की है और कलई कलई की है। दो पदार्थ के बीच में अत्यंत अभाव है। दो द्रव्य के बीच में अत्यंत अभाव है। आहाहा!

निमित्त-नैमित्तिक संबंध को देखनेवाले दो पदार्थ की जुदाई नहीं देख सकते है। की भैया! निमित्त नैमित्तिक संबंध तो है ना। आहाहा! कलई है निमित्त और वो सफेद हुई नैमित्तिक। भाई! निमित्त नैमित्तिक संबंध है ही नहीं। निमित्त नैमित्तिक संबंध के नाम पे वो कर्ता-कर्म घटा लेता है। दो द्रव्य की एकता हो गई। **कलई दीवार-आदि स्वरुप होना चाहिए**। दीवार आदि से पृथक द्रव्य नहीं होना चाहिए। ऐसा होने पर, जो कलई दीवार की हो, तो कलई दीवाररूप हो गई। कलई के स्वद्रव्य का उच्छेद नाश हो जाएगा। आहाहा! कलई रहेगी (नहीं)। कलई नाम के पदार्थ का अस्तित्व रहेगा (नहीं)। जो भींत सफेद हो गई, दीवार सफेद हो गई, दीवार तो काली है, दीवार तो कल तक तो काली है, काली और आज सफेद हो गई। आहाहा! कल तक तो दीवार काली। पत्थर आता है ना, स्वभाव से काला होता है, ऐसे पत्थर की

Version 1: http://AtmaDharma.com or http://AtmaDharma.org Please report errors to rajesh@AtmaDharma.com

दीवार। कल तक तो काली थी आज क्या कमरा कैसा हो गया? कमरा सफेद हो गया। कमरा सफेद हो गया? कि कलई सफेद है? आहाहा! कलई गायब हो गई, अहाहा दृष्टि में से ओझल हो गई। कलई दिखाई नहीं देती उसको। आहाहा! दीवार का सत्य स्वरूप भी गया और कलई का सत्य स्वरूप भी गया। एक की भूल में दो भूल है। जो दीवार काली है, तो कलई सफेद है। और जो दीवार सफेद हो गई, तो दीवार भी गई और कलई भी गई। ये दृष्टांत क्यों देते है आचार्य भगवान? कि सिद्धांत जरा सरल पड़े समझने के लिए इसलिए दृष्टांत आता है। दृष्टांत दृष्टांत के लिए नहीं है। दृष्टांत तो सिद्धांत समझाने के लिए है। और दृष्टांत भी कठिन है। थोड़ा दृष्टांत भी कठिन है। आहाहा!

क्योंकि **स्वद्रव्य का उच्छेद हो जाएगा। परंतु द्रव्य का उच्छेद तो नहीं होता**। कलई का नाश तो नहीं होता। नहीं होता। **क्योंकि एक द्रव्य का अन्य द्रव्य में संक्रमण होने का तो पहले से ही निषेध किया है**। तीसरी गाथा है समयसार की - कि एक द्रव्य संक्रमण होकर, बदली होकर, दूसरे द्रव्य रूप होता नहीं है।

जड़ भावे जड़ परिणमे, चेतन चेतन भाव।
कोई कोई पलटे नहीं छोड़ी आप स्वभाव।

चेतन चेतनरूप रहता है और जड़ जड़रूप रहता है। तो द्रव्य का अन्य द्रव्यरूप संक्रमण होने पर, संक्रमण बदला, जड़ चेतन हो जाये चेतन जड़ हो जाये, (इसका तो) पहले (तीसरी गाथा) से ही निषेध किया है। प्रथम से ही निषेध किया है। **इससे (यह सिध्द हुआ कि)**, दृष्टांत में अपना टाइम ज्यादा नहीं लेता हूँ, सिद्धांत पर ज्यादा टाइम लेना है। **इससे (यह सिद्ध हुआ कि) कलई दीवार-आदि की नहीं है**। (कलई) दीवार में चिपकी है तो भी वो दीवार की नहीं है, वो दीवाररूप हुई नहीं। आहाहा!

ये पहले तो निरपेक्ष तो देख। आहाहा! सापेक्ष से मत देख। कलई निरपेक्ष ही है। आहाहा! ये कथन पद्धति सापेक्ष की है, मगर निरपेक्ष ही है। आहाहा! **इससे (यह सिध्द हुआ कि) कलई दीवार आदि की नहीं है**। जब डब्बे में है, तो भी कलई कलई की है। और दीवार में है तो भी कलई कलई की है दीवार की होती नहीं है। **अभ आगे और विचार करते हैं** कलई के लिए। कलई के लिए ठीक है। दीवार की नहीं है तो नहीं है। तो कलई किसकी है? वो चर्चा चलती है। आहाहा! असद्भूत व्यवहार का निषेध करके अभी सद्भूत व्यवहार के अंदर आता है। **कलई दीवार-आदि की नहीं है, तो कलई किसकी है?** कलई किसी की तो होनी चाहिए ना? आपने कहा दीवार की नहीं हो तो न हो। तो मेरा प्रश्न है कि कलई किसकी है? आहाहा! **कलई की ही कलई है**। क्या उत्तर दिया आचार्य भगवान ने? कलई की ही कलई है। ही लगाया। कथंचित् कलई की कलई है कथंचित् दीवार की कलई है, इसका नाश करने के लिए। आहाहा! अज्ञानमय कथंचित् भाव का नाश करने के लिए कलई की ही कलई कलई है। आहाहा! जहाँ-तहाँ कथंचित् लगाते हैं। आहाहा! जो धर्म जिसमें नहीं है उसमें स्थापकार कथंचित् लगाना। आहाहा!

आदरणीय बाबूजी:- बेईमानी तो हर जगह चल सकती है।

उत्तर:- बेईमानी तो हर जगह चल सकती है। आहाहा! मगर विचिक्षण पुरूष के साथ चलती नहीं है। **कलई की ही कलई है**। आहाहा! सम्यक एकांत किया। सम्यक एकांत, अंदर में लाने के लिए। भींत की नहीं है। कलई की ही कलई है, ऐसा कह दिया। मगर शिष्य को संतोष नहीं हुआ।

Version 1: http://AtmaDharma.com or http://AtmaDharma.org Please report errors to rajesh@AtmaDharma.com

आगे प्रश्न करता है शिष्य। आहाहा! **(इस) कलई से भिन्न ऐसी दूसरी कौन सी कलई है कि जिसकी (यह) कलई?** कलई की कलई है - ऐसा कहा ना, तो शिष्य ने प्रश्न किया कि ठीक है! आपने किसकी कलई की किसकी कलई है आपने दो बताया, तो बताओ हमको कि दो कलई है कि एक है। कौन किसकी है? आहाहा! कि भैया! वो तो समझाने के लिए भेद से समझाया जाता है। दो कलई नहीं है। आहाहा! ये दृष्टांत जो ख्याल में आवे तो सिद्धांत बराबर समझ में आ जाएगा। पिंकी! समझे? आहाहा! **(इस) कलई से भिन्न अन्य कोई कलई नहीं है, किंतु वे दो स्व-स्वामीरूप अंश ही है।** कलई की कलई है, वो स्व-स्वामी अंश भेद है। कलई की कलई है, स्व-स्वामी। कलई भींत की है, ये तो व्यवहार भी नहीं है। वो तो व्यवहाराभास है। मगर कलई की कलई है, इतना स्वस्वामी संबंध भेदरूप व्यवहार है। आहाहा! प्रेरे जे परमार्थने ते व्यवहार समंत। आहाहा! कलई भींत की है, वो तो व्यवहार ही नहीं है, वो तो व्यवहाराभास है। क्योंकि एक द्रव्य के साथ दूसरे द्रव्य का कुछ संबंध नहीं है। अंदर में गुण-गुणी का भेद है, गुण-गुणी का भेद, वो व्यवहार है। आहाहा! एक अभेद में भेद करना, सो व्यवहार है। मगर भिन्न भिन्न द्रव्य के बीच व्यवहार कहना, व्यवहाराभास है। पंचाध्यायीकार ने तो उसको नयाभास में डाल दिया! आहाहा!

ये आत्मा की खोज की बात है। आज तक तूने आत्मा की खोज रुचिपूर्वक किया नहीं है। आज अवसर आ गया है, एक समय प्रमाद करने जैसा नहीं है। बाबूजी ने कहा ना, सावधान हो जा। सप्तम गुणस्थान में से छठवें गुणस्थान में आता है ना उसका नाम प्रमाद है। आहाहा! उत्कृष्ट बात है। असावधान दशा का नाम प्रमाद है। सप्तम गुणस्थान में मुनिराज वो सावधानी, ये अप्रमत्त दशा है। वहाँ प्रमाद नहीं है। वहाँ प्रमाद नहीं है।

(इस) कलई से भिन्न ऐसी दूसरी कौन सी कलई है कि जिसकी (यह) कलई? इस कलई से भिन्न अन्य कोई कलई नहीं है। किंतु वे दो स्व-स्वामीरूप, ये स्व और वो उसका स्वामी, एक पदार्थ में, **अंश ही है। यहाँ स्व-स्वामीरूप अंशों के व्यवहार से क्या साध्य है?** असद्भूत व्यवहार की तो बात किया ही नहीं। मगर सद्भूत व्यवहार में आया, ज्ञान आत्मा को जानता है, साध्य की सिद्धि नहीं होगी। और ज्ञान पर को जानता है, वो तो व्यवहार ही नहीं है। आहाहा! बात ऊंची बात है, नजदीक आने की बात है। अंदर में आने की बात है। आहाहा! आत्मा पर को जानता है, वो तो व्यवहार ही नहीं है। आत्मा आत्मा को जानता है, वो व्यवहार से भी सम्यग्दर्शन नहीं होता है। आहाहा!

सारा समयसार लिखने का आशय एक सम्यकदर्शन की उत्पत्ति कैसे हो। अप्रतिबुध्द के लिए ये समयसार की रचना की है। आहाहा! काल आया है प्रमाद करने जैसा नहीं है। अपना पक्ष छोड़ देना चाहिए। आहाहा! मैं पर को जानता हूँ, वो पाप है। जब पाप लगेगा तो व्यावृत्त होकर अंदर में चला जाएगा।

यहाँ स्व-स्वामी अंशों के व्यवहार से क्या साध्य है? कुछ भी साध्य नहीं है। ऐसा? कुछ भी साध्य नहीं है? सम्यक्त्व के सन्मुख तो हुआ, इतना तो है कि नहीं? बिल्कुल नहीं। सन्मुख हुआ ही नहीं। सन्मुख का स्टेज हम निकाल देते हैं, बीच में से। सीधा आत्मा को जान ले। वो बात क्या है बीच की बात? **स्व-स्वामीरूप अंश ही है। स्व-स्वामीरूप अंशों के व्यवहार से क्या साध्य है?** कलई कलई की है,

Version 1: http://AtmaDharma.com or http://AtmaDharma.org Please report errors to rajesh@AtmaDharma.com

उसमें साध्य की सिद्धि नहीं है। कलई नहीं मिलती है। आहाहा! कलई गायब हो गई उसमें। कलई कलई की है, इसमें कलई गायब हो गई। कलई दीवार की है, उसमें कलई गुम हो गयी कि कलई रही? कलई दीवार की है उसमें तो कलई का नाम निशान नहीं रहा। मगर कलई कलई की है, इसमें तो नाम तो रहा। इसमें तो नाम तो रहा। अभी आ गया। कलई दीवार की है तो इसमें कलई का नाश हो गया और नाम-निशान मिट गया। मगर कलई कलई की है, इसमें नाम तो रह गया। मगर भाव आया नहीं। क्या कहा? अनुभव नहीं हुआ। बराबर! प्रेमचंद जी साहब! ये भिण्ड के अंदर अच्छी ज्ञान गोष्ठी, स्वाध्याय, अपना स्वाध्याय होता है। आहाहा! कोई उपदेशक इधर नहीं है। आहाहा! स्वस्वामी अंश, ये स्वस्वामी अंश के व्यवहार से क्या साध्य है? कुछ भी साध्य नहीं। कुछ भी। सम्यक्त्व के सन्मुख हुआ कि नहीं? आहाहा! सम्यक्त्व के सन्मुख का भाव है तेरे को? कि शाक्षात देखने का भाव आ गया? सोचो तो सही। क्या है? बीच की बात, व्यवहार की बात अभी याद नहीं कर। आहाहा! सीधा उपयोग को उस पर लगा दे। **कुछ भी साध्य नहीं है। तभ फिर कलई किसी की नहीं है।** तो कलई कलई की है, वो आपने नहीं कहा। तो **कलई किसी की नहीं है। कलई कलई ही है।** कलई की कलई नहीं है। कलई कलई ही है। बहुत घोंटने जैसी बात है। कलई की कलई है - ऐसा तो स्वरूप कलई का नहीं है। तो स्वरूप क्या है? कि कलई कलई ही है। अभी सिद्धांत पर आते हैं -

जैसे यह दृष्टांत है, उसी प्रकार यह द्राष्टान्त है, सिद्धांत आता है। **इस जगत में**, इस जगत में - लोक के अंदर **चैतयिता है (चेतनेवाला अर्थात आत्मा)** है। जाननेवाला देखनेवाला आत्मा है। वह आत्मा तो द्रव्य हो गया। उसमें गुण क्या है? कलई तो द्रव्य है। उसमें गुण? सफेद गुण से भरा हुआ पदार्थ है। आया था कि नहीं? कलई तो द्रव्य है। तो द्रव्य है तो उसका कोई गुण होना चाहिए। तो श्वेत गुण से भरी हुई कलई ऐसा आया था। अभी ये चैतयिता आत्मा है तो द्रव्य है। तो द्रव्य है, तो कोई गुण होना चाहिए। तो **वह ज्ञानगुण से परिपूर्ण स्वभाववाला द्रव्य है**। उसमें राग का प्रवेश नहीं है। परिपूर्ण? आहाहा! ज्ञान गुण से भरा हुआ है? कथंचित् उसमें राग तो है संसारी में। अरे भैया! ज्ञान गुण से परिपूर्ण भरा हुआ है। उसमें राग का, दुःख का, बिल्कुल प्रवेश होता ही नहीं है उसमें। जड़ चेतन को स्पर्श करता नहीं है। तो जड़ चेतन को स्पर्श करता नहीं है, तो चेतन में कहाँ से आवे? आहाहा! बुद्धि भ्रष्ट हो गई तेरी। आहाहा! जो जिसमें नहीं है, शुभराग, पुण्यभाव उससे धर्म मानता है। गजब की भूल है, मोटी बड़ी भारी भूल है। एक मन में आठ पंसेरी की भूल है, एक मन में आठ पंसेरी की भूल है। शुभभाव में थोड़ा तो लाभ होगा। पुण्य करते-करते, आहिस्ते-आहिस्ते, धीमे-धीमे, मोक्ष हो जाएगा। देखिये अनुभव की बात तो ऊँची है। अपने लिए तो थोड़ा शुरूआत तो पुण्य से करना चाहिए।

एक प्रश्न आया था राजकोट में, आप अनुभूति की बात करते हैं, वो तो सही है। अनुभव से धर्म की शुरुआत, अनुभव से वृद्धि और अनुभव से पूर्ण। मगर हम अनुभव तक तो पहुंच नहीं सकते और पाप करना नहीं है। पाप तो करना नहीं है, अनुभूति तक तो पहुंच नहीं सकते तो बीच में पुण्य करना कि नहीं करना? करना कि नहीं करना? वो तो मालूम था कि दो में से एक तो जवाब देगा ना। या तो करना या नहीं करना। ऐसा प्रश्न लगाया, करोड़पति आदमी, करोड़पति।

आदरणीय बाबूजी:- उलझाने का प्रश्न।

Version 1: http://AtmaDharma.com or http://AtmaDharma.org Please report errors to rajesh@AtmaDharma.com

उत्तरः- हाँ! उलझाने का प्रश्न। अपना समाधान करने के लिये। उलजाने याने गूचवाड़ा! आहाहा! तो प्रश्न किया कि पुण्य करना कि नहीं करना? अनुभव तक तो पहोचता नहीं। पाप करने से तो नरक निगोद में चले जायेंगे। तो पुण्य करना कि नहीं करना? तो गुरूदेव ने क्या जबाब दिया कि - जब पुण्य का परिणाम आवे, आर्य जीव को, तब पुण्य के परिणाम से मेरा आत्मा जुदा है, ऐसा बार-बार विचार करना। पुण्य करना ऐसे भी नहीं कहा और नहीं करना ऐसे भी नहीं कहा। क्योंकि आत्मा कर्ता नहीं है, इसलिए नहीं कहा। मर्म है उसमें। आत्मा पुण्य पाप करनेवाला नहीं है, इसलिए ऐसा जवाब दिया। पुरानी होने पर भी एक समय में मिटती है। आहाहा! पुरानी है ऐसा अभी सोचना नहीं है। ये याद करने का काल नहीं है अभी। याद करने की जगह भी नहीं है भिण्ड में तो। भिण्ड में तो। तो गुरुदेव ने जबाब दिया कि जब-जब आर्य जीव को भगवान का पूजा का, भक्ति का, वंदन का शुभभाव आता है, जब आवे तब उससे मेरा आत्मा जुदा ज्ञानमय है, ऐसा बार बार विचार करना। विचार करना, आत्मा का विचार करना, ऐसा कहा। पुण्य करना ये भी नहीं कहा और नहीं करना ये भी नहीं कहा। क्योंकि कर्ता है ही नहीं। कर्ता हो तो करने न करने के एजेंडा पर आ जाय। कभी एजेंडा पर कभी आवे? कि करना न करना तभी आवे। आत्मा कर्ता हो तो, आत्मा तो मूल में कर्ता है नहीं। वो अज्ञान की खान में से अज्ञानी ने निकाला है। आहाहा! अज्ञान की खान में से आता है ऐसा भाव। उसकी बात सुनना नहीं। उसका परिचय करना नहीं। आहाहा! उसकी परछाई में जाना नहीं। आत्मा ज्ञान स्वभावी है। कथन क्या करना? कि थोड़ा पुण्य करना। ऐसा लिखा नहीं है - १४४ में। थोड़ा पुण्य करना लिखा है? प्रथम श्रुतज्ञान के अबलम्बन के द्वारा मैं ज्ञान स्वभावी आत्मा हूँ। आहाहा! ऐसा निर्णय करना - प्रथम और पश्चात। पहले कुछ करने की बात है कि नहीं? हाँ है। तो वो समझ जाता है कि थोड़ा पुण्य की जाति का ज़रा दया-दान का आएगा। मैं प्रथम में ज्ञान स्वभावी आत्मा हूँ, ऐसा निर्णय करना।

आदरणीय बाबूजीः- ऐसा निर्णय करना कि मैं कुछ करनेवाला नहीं हूँ।

उत्तरः- ऐसा करना कि मैं जाननेवाला हूँ, मैं करनेवाला नहीं हूँ - ऐसा निर्णय करना। पुण्य पाप करना कि नहीं करना जवाब ही नहीं दिया। क्योंकि आत्मा पुण्य पाप का करनेवाला है ही नहीं। अहाहा! कर्ताबुद्धिवाले को लगता है, वो तो अज्ञान मिथ्यादृष्टि है। उसकी परछाई नहीं चढ़ना। दूर रहना। दूर से जय जिनेंद्र। द्वेष नहीं करना। अज्ञानी के प्रति द्वेष नहीं करना। आवे तो करणा हो तो करो बाकि द्वेष तो करने की बात है ही नहीं। जय जिनेंद्र! दूर से जय जिनेंद्र कर लेना। जय जिनेंद्र करके खीस जाना उसके पास से। आहाहा! संग नहीं करना। कुशील का संग छोड़ देना, ऐसा पाठ है। आहाहा! पुण्य पाप अधिकार में है। भैया! द्वेष नहीं करना किसी के ऊपर। राग का करने की मनाहीं है तो द्वेष (कि तो बात ही नहीं है)। सब भगवान आत्मा हैं। एक समय की भूल है। अभी उसका पुण्य का पक्ष है। जब चला जाएगा वो भी परमात्मा हो जाएगा। इसमें क्या? एक समय की भूल है। उदार रहना अपने को। अपने को उदार रहना। मगर चूँक नहीं जाना। उदार का अर्थ चूंकना नहीं है।

इस जगत में चेतयिता (चेतनेवाला अर्थात आत्मा) द्रव्य, द्रव्य कहा, **वह ज्ञानगुण से परिपूर्ण स्वभाव वाला द्रव्य है।** उसमें राग का प्रवेश नहीं है। मिथ्यात्व का प्रवेश आज तक नहीं हुआ। निगोद के जीव में भी मिथ्यात्व का प्रवेश हुआ नहीं है। ज्ञानगुण से भरा हुआ आत्मा है। आहाहा! अनंता जीव निगोद

में है। उसमें से कालक्रम से बहुत तीर्थंकर होनेवाला है। तीर्थंकर होकर परमात्मा हो जायेंगे। निगोद में अभी भी हैं तो भी। वह ज्ञान गुण से परिपूर्ण है, अधूरा नहीं। कि केवलज्ञान होवे ना तब ही परिपूर्ण कह सकते हैं। तेरी नजर पर्याय पर जाती है। तेरी नजर गुण पर जाती नहीं। आहाहा!

उपयोग लक्षण है। एक शुद्ध उपयोग लक्षण है और एक ज्ञान गुण लक्षण है। लक्षण का तीन प्रकार है। लक्षण का तीन प्रकार है, एक सामान्य उपयोग लक्षण, सब जीव के पास। भव्य-अभव्य सब। समझे? उसमें उपयोग में आत्मा की परोक्ष अनुभूति होती है। क्या कहा? उपयोग में आत्मा की परोक्ष अनुभूति होती है। निरंतर समय-समय पर। और जब शुद्ध उपयोग होता है, तब आत्मा की प्रत्यक्ष अनुभूति होती है। ये दो लक्षण हैं - पर्याय का, पर्याय प्रधान लक्षण। ये दो लक्षण पर्याय प्रधान लक्षण और तीसरा ये दृष्टि का विषय शुद्धात्मा, उसका लक्षण सहज ज्ञान, सहज दर्शन, सहज आनंद, ये गुण हैं, गुण। गुण लक्षण है। दृष्टि का विषय का लक्षण गुण है। और ज्ञेयभूत आत्मा का लक्षण उपयोग भी है और शुद्ध उपयोग भी है। उपयोग में परोक्ष अनुभूति है और शुद्ध उपयोग में प्रत्यक्ष अनुभूति है। आहाहा! तीन लक्षण, अचल जी!

आत्मा का लक्षण तीन है, आज शास्त्र में आया। उपयोग लक्षण तत्वार्थसूत्र में कहा उपयोगो लक्षण। ऐसा समयसार में भी उपयोग लक्षण कहा, सामान्य लक्षण। समझे? और समयसार में ज्यादा शुद्ध उपयोग लक्षण कहा क्योंकि शुद्ध उपयोग लक्षण से आत्मा की अनुभूति प्रत्यक्ष होती है। उपयोग में परोक्ष है और शुद्ध उपयोग में प्रत्यक्ष। उपयोग में आनंद नहीं है और शुद्ध उपयोग में आनंद है। दो लक्षण हुआ।

अभी तीसरा लक्षण इधर आया है, ज्ञान गुण से परिपूर्ण है। वो जो उपयोग लक्षण है, उपयोग लक्षण, वो तो क्षयोपशम रूप है, उपयोग लक्षण। और शुद्ध उपयोग लक्षण है वो आचरणरूप क्षयोपशम लक्षण है। इसके साथ आनंद है। उसके साथ आनंद नहीं है। वो दो पर्याय के बीच में वो व्यवहार लक्षण हो गया, उपयोग लक्षण। और शुद्ध उपयोग निश्चय लक्षण हो गया। जो लक्ष्य को प्रसिद्ध करता है। और तीसरा, ज्ञान लक्षण, दर्शन लक्षण, परम पारिणामिक भाव लक्षण। वो गुण है ना परम पारिणामिक भाव की परिणति उसमें तन्मय है गुण में। और शुद्ध उपयोग जो हुआ, उसमें क्षयोपशम लक्षण है। क्षायिक भी लक्षण है, जब पूरा होता है। ज्ञान की पर्याय शुद्ध उपयोग पूरा होता है। तो क्षायिक लक्षण और जो उपयोग सामान्य लक्षण है, वो तो सामान्य लक्षण है। वो तो उसमें परोक्ष अनुभूति होती है, प्रत्यक्ष होती नहीं है।

मगर राग को तो याद ही नहीं करना। लक्षण की जब चर्चा चले, राग तो जड़ है वो तो पुद्गल को प्रसिद्ध करता है। पुद्गल का लक्षण है। जड़ है अचेतन है। पाँच महाव्रत जीव का लक्षण नहीं है। आहाहा! जीव का लक्षण तो उपयोग है। आगे बढ़ो तो शुद्ध उपयोग है। दृष्टी के विषय तक पहुँचो तो ज्ञान, दर्शन, आनंद मेरा लक्षण है, आहाहा! जो नित्य लक्षण। वो तो अनित्य लक्षण है। उपयोग अनित्य, शुद्ध उपयोग भी अनित्य। ज्ञान गुण तो नित्य है। नित्य का लक्षण नित्य होना चाहिए। इसलिए वो दो अनित्य लक्षण मेरा नहीं है। आगे बढ़ना आगे अन्दर जाने की बात है। मेरा लक्षण तो शाश्वत ज्ञान दर्शन गुण से परिपूर्ण भरा है। ये आया इधर, **वह ज्ञान गुण से परिपूर्ण स्वभाववाला**। आहाहा! ऐसे ज्ञान परिपूर्ण, दर्शन परिपूर्ण, आनंद सब ले लेना। एक ज्ञान की प्रधानता से बात चलती है। परिपूर्ण स्वभाववाला द्रव्य है। **पुद्गलआदि परद्रव्य व्यवहार से वो चेतयिता (आत्मा का) ज्ञेय (ज्ञात होने योग्य)** है। आहाहा! रागादि पुद्गल नोकर्म पुद्गल कर्म पुद्गल, ये सब पुद्गल की रचना है, ये ज्ञान का व्यवहार ज्ञेय है। यानि सचमुच ज्ञेय है नहीं।

Version 1: http://AtmaDharma.com or http://AtmaDharma.org Please report errors to rajesh@AtmaDharma.com

आहाहा!

ऐसा एक नय चक्र है माईल्ल धवल का। इसके अंदर एक बहुत बढ़िया बात आ गई। आचार्य भगवान फरमाते हैं कि जो व्यवहार नय से हमने तो कहा था, व्यवहार नय से राग मेरा है, जीव का है। व्यवहार नय से देह मेरा है मैं ऐसा कहता हूँ। तो वो कहनेवाला निश्चय से आत्मा को मानता है। बोलता है व्यवहार नय से, मानता है निश्चय से। आहाहा! ये अपने को चेतने की गाथा है। व्यवहार नय से दुसरे को तो छेतरपिंडी करता है, अभिप्राय का छल है। दुसरे को छेतरपिंडी के लिए कहते हैं, हम राग को निश्चय से कहाँ आत्मा का स्वरूप कहेते है, हम तो व्यवहार नय से कहते हैं। ये कहनेवाला छल करता है। वो मानता है कि राग आत्मा में होता है, राग का कर्ता आत्मा है। और दूसरे को समझाने के लिए व्यवहार लगाता है। वो मानता है राग को आत्मा का ही मानता है।

आदरणीय बाबूजी:- व्यवहार से तो आत्मा का है ना?

उत्तर:- व्यवहार से तो आत्मा का है ना? निश्चय से न हो तो कोई बात नहीं। निश्चय से हम कहाँ कहते हैं? व्यवहार से कहते हैं। हाँ ! ठीक है। व्यवहार से जानता हूँ - ऐसी भाषा क्यों नहीं आई? व्यवहार से मैं कर्ता हूँ - ऐसी भाषा क्यों आई? पकड़ा गया, पकड़ा गया। समज गया मिथाभाई? राग का कर्ता कहता हूँ वो तो व्यवहार नय से है। राग को मैं जानता हूँ, वो व्यवहार नय से है - ऐसी भाषा क्यों नहीं आई? परसों बाबूजी साहब ने कहा था कि भाषा बदलेगा तो भाव बदल जाएगा। हाँ! भाव बदल जाएगा। हिंदी में थोड़ा ऐसा आता है। आहाहा!

पुद्गलादिका परद्रव्य व्यवहारसे उसचेतयिताका, (आत्माका) ज्ञेय (– ज्ञात होने योग्य) है, ज्ञेय (ज्ञात होने योग्य) है। **अब, 'ज्ञायक (-जाननेवाला)**, ज्ञायक यानि जाननेवाला। ज्ञायक का अर्थ जानने वाला है कि करने वाला? सब ईमानदारी से जवाब देना, ईमानदारी से सब जवाब दे दो। इधर हाथ रख कर बोलना। आत्मा ज्ञायक है तो जाननेवाला है कि करनेवाला? दूसरी बार पूछता हूँ कि ये ज्ञायक है तो जाननेवाला है कि करनेवाला? ये पूर्णता होती है न आगे।

आदरणीय बाबूजी:- प्रस्ताव पास हो गया।

उत्तर:- बाबूजी ने कहा कि जो प्रस्ताव रखा वो पास हो गया। सर्वानुमति से। बहुमति नहीं। इधर आनेवाला 'हाँ' ही बोले, ऐसा ही बोले, ऐसा नहीं बोले। ऐसा बोलनेवाला इधर आता ही नहीं है। पंडाल में आता ही नहीं है। भव्य ही आता है। क्या कहा? ऐसा है कि इस तीर्थंकर की सभा में भव्य ही आता है। इधर हाँ बोलनेवाला आता है कि मैं ही ज्ञायक हूँ। मैं जाननेवाला हूँ करनेवाला नहीं हूँ। करने का तो चौकड़ा मार दे। शुन्य नहीं। शुन्य में तो (एक लगकर) एकड़ा हो जाएगा।

अब, 'ज्ञायक (–जाननेवाला) चेतयिता, ज्ञेय जो पुद्गलादिका परद्रव्य उनका है या नहीं ?' कर्ता की तरफ चर्चा की ही नहीं। ज्ञेय को जानता है कि नहीं जानता है। जानता है तो सचमुच क्या है? उसकी चर्चा अभी जानने की है। करने का तो एजेंडा पर case है ही नहीं। क्योंकि ज्ञायक है तो जाननहार है। तो ज्ञेय को जानता है कि सचमुच ज्ञायक को जानता है?

ॐ

Version 1: http://AtmaDharma.com or http://AtmaDharma.org Please report errors to rajesh@AtmaDharma.com